ISSN No. 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 3, अंक : 1, अप्रैल 2016

बाँसुरी : विश्लेषणात्मक अध्ययन

राजर्षि कुमार कसौधन
शोधार्थी, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)

सार-संक्षेप

गीतानुरंजन के लिए वाद्य-वादन की परंपरा प्राचीन काल से ही रही है। मन के विशिष्ट भावों को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न वाद्यों का प्रयोग किया जाता था। नाट्य में वाद्य-संयोजन और वाद्य-वादन का प्रमुख स्थान रहा है। दृश्य को अधिक प्रभाव शाली बनाने के लिए विभिन्न वाद्य यंत्रों का संयोजन किया जाता था। ऐसे वाद्य वृंद अथवा आतोद्य-विन्यास के लिए भरत नें 'कुतप' संज्ञा दी है। भरतकालीन नाट्य में संगीत का प्रयोग बहुलता से किया जाता था। यवनिका के अभ्यंतर से वाद्यों का नियोजन तथा गीत से संबद्ध जो क्रिया कलाप किया जाता था। उसे 'बहिर्गीत' अथवा 'निर्गीत' कहते थे। बर्हिगीत के अंतर्गतप्रत्याहार, अवतरण, आरंभ, आश्रावणा, वक्त्रपाणि ,परिघट्टना, संघोटना, मार्गोत्सारित तथा आसारित-इन नौ क्रियाओं का समावेष किया जाता था। कला में विशेष उत्कर्ष अथवा निपुणता विद्यार्थी के ज्ञान, प्रतिभा और अनुकूल वातावरण के परिणाम स्वरूप होती है। संगीत के प्रति आस्था और आकर्षण के काल में प्राय: विद्यार्थी के सामने यह समस्या आ खड़ी होती है कि उसे कौन-सा वाद्य सीखना चाहिए, किससे सीखना चाहिए और उसमें निपुणता प्राप्त करनें के लिए कितनी अवधि तक अपने श्रम की आहुति देनी चाहिए। इस स्थिति में अभिभावक एवं गुरुजनों का कर्तव्य है कि विद्यार्थी के लिए उचित मार्ग दर्शन प्रदान करें। अन्यथा परिणाम यही होता है कि विद्यार्थी कभी सितार सीखने लगता है और कभी सरोद। लक्ष्य परिवर्तन से उसकी आयु का वह महत्वपूर्ण भाग नष्ट हो जाता है, जो संगीत में पारंगत होने के लिए सर्वश्रेष्ठ काल कहा जाता है। संगीत का सामान्य अध्ययन और व्यावसायिक अध्ययन, दोनों अलग-अलग हैं। अत: वाद्य यंत्र सीखते समय तद्नुकूल उपयुक्त आचार्य का चुनाव करना ही हितकर सिद्ध होता है। प्रस्तुत 'शोध पत्र' में बाँसुरी वाद्य यंत्र सीखने वालों को तत्संबंधी प्रारंभिक ज्ञान मिल सके। आज की दृष्टि में लाभप्रद सिद्ध हो, इसकी हमने पूरी चेष्टा की हैं। विश्वास है, संगीत जिज्ञासु, संगीत प्रेमी, संगीत कलाकार और विशेषत: संगीत के विद्यार्थियों हमारे इस प्रयास से किसी न किसी रूप में अवश्य लाभान्वित होंगें और यही हमारे परिश्रम का समुचित पुरस्कार होगा।

मुख्य शब्द : कुतप, गतियाँ, वादक के गुण-दोष, बाँसुरी के प्रकार, बाँसुरी से स्वर निकालना

शोध-पत्र

बाँसुरी की रचना

वैणव: खादिरो दान्तश्चान्दनो राक्तचन्दन:।
आयस: कांस्यजो रौप्यो वंश: स्यात् कांचनोऽथवा॥ 424॥

वर्तुल: सरल: श्लक्ष्णो ग्रन्थिभेदव्रणोज्झित:।
कनिष्ठाङ्गुलिविस्तारं गर्भे च सुषिरं दधत्॥ 425॥

स्वदैर्घ्यमानदैर्घ्य च समाकृति समन्तत:॥ 426॥

शब्दार्थ : वंश वैणव: बाँस का, खादिर: खैर (की लकड़ी) का, दान्त: (हाथी) दाँत का, चान्दन: चन्दन का, राक्तचन्दन: लाल चंदन का, आयस: लोहे का, कांस्यज: काँसे से उत्पन्न, रौप्य: चाँदी का अथवा कांचन: या सोने का वर्तुल: गोल, सरल: सीधा, श्लक्षण: चिकना, ग्रन्थि-भेद-व्रण-उज्झित: गाँठ, फटेपन, छेद से रहित गर्भे च और गर्भ में (अर्थात भीतर) स्वदैर्घ्यमानदैर्घ्य अपनी लंबाई के नाप की लंबाई (अर्थात् पूरी लंबाई) में कनिष्ठा-अङ्गुलिविस्तारं छोटी उँगली जितने वाला सुषिरं दधत् छेद धारण करता हुआ समंतत: सम-आकृति: च और चारों ओर से सम (एकसे) आकार वाला स्यात् होता है।

बाँसुरी के प्रकार : बाँस (वंश), आबनूस की लकड़ी ,हाथी दाँत, चंदन, रक्तचंदन , लोहा, काँस, चाँदी और स्वर्ण से बाँसुरी बनाई जा सकती है। किसी भी प्रकार की ग्रंथि, भेद ओर ब्रण से रहित होनी चाहिए एवं रंध्र प्रमाण, (सूराख), छोटी अंगुली (कनिष्ठा), का व्यास बताया गया है। स्वर-रंध्रों का परस्पर अंतर आधा अंगुल और मुख-रंध्र से तार-रंध्र की दूरी 1-2-3-4-5-6-7-8-9-10-11-12-13-14-16 या 18 अंगुल हो सकती है। इन पंद्रह प्रकार के बंशीयों (बाँसुरी) के अलग-अलग नाम एकवीर, उमापति, त्रिपुरुष, चतुर्मुख, पंचवक्त्र, षण्मुख, मुनि, वसु, नाथेंद्र, महनंद, रुद्र, आदित्य, मनु, कलानिधि और अष्टादशांगुल बताए हैं। [4]

बाँसुरी की गतियाँ

कम्पिता वलिता मुक्तार्धमुक्ता च निपीडिता॥ 455॥
इति वंशे गति: प्रौक्ता शारंदेवेन पंचधा। 456।

शब्दार्थ : म्पिता, वलिता, मुक्ता अर्धमुक्ता निपीडिता च और निपीडिता च और इति यों वंशे वंश में पंचधा गति: पाँच प्रकार की गति शारंदेवेन प्रोक्ता शारंदेव के द्वारा कही गई (है)।

बाँसुरी की पाँच गतियाँ शास्त्र में बताई गई हैं:—कंपिता, वलिता, मुक्ता, अर्द्धमुक्ता और निपीणिता। इन गतियों के द्वारा विविध वर्णालंकार प्रस्तुत किए जाते हैं। जैसे - बाँसुरी को अधर में रखकर कंपन करे, तो कंपिता गति, अंगुलियों को टेढ़ा करके चालान करने से वलिता, रंध्र पूरा खोल देने पर मुक्ता एवं आधा खोलने पर अर्द्धमुक्ता गति हो जाती हैं। समस्त रंध्रों को बंद करके जोर से बजाने का नाम निपीणता है।

बाँसुरी के नाद और उनके गुण

स्निगधता घनता रक्तिर्व्यक्ति: प्रचुरता ध्वने: ॥ 654 ॥
लालित्यं कोमलत्वं च नादानुरणनं तथा।
त्रिस्थानर्त्व श्रावकत्वं माधुर्य सावधानता ॥ 655 ॥
द्वादशेति गुणा: प्रोक्ता फूत्कारे सूरिशांडिणा ॥ 656 ॥

शब्दार्थ : स्निग्धता र्स्निधता, घनता घनता, रक्ति: रंजकता, व्यक्ति: स्पष्ट प्रकटता, ध्वने: प्रचुरता ध्वनि की स्थूलता (बाहुल्य), लालित्य लावण्य कोमलत्वं च और कोमलता, नाद-अनुरणनं ध्वनि का अनुरणन तथा और त्रिस्थनत्वं तीनों स्थानों में व्याप्ति, श्रावकत्वं (दूर तक) सुनाई देना, माधुर्य मधुरता, सावधानता एकाग्रता सूरिशांगिणा विद्वान् शारंदेव के द्वारा फूत्कारे फूत्कार (फूँक) इति द्वादश गुणा: ये बारह गुण प्रोक्ता: कहे गये (है)।

1. **स्निग्धता**—रुखापन न रहना।
2. **घनता**—स्थूलता।
3. **व्यक्ति**—स्पष्ठता।
4. **रक्ति**—रंजन-शक्ति।
5. **प्रचुरता**—नाद पूर्णता।
6. **लालितय**—ललित भाव।
7. **कोमलत्व**—मुदुलता।
8. **अनुरणन**—अनुरणतव।
9. **त्रिस्थानत्व**—तीनों सप्तकों में संचार करना।
10. **श्रावकत्व**—सुनने में रमणीय रहना।
11. **माधुर्य**—मधुरता।
12. **सवधानता**—सर्तकता एवं एकसी फूँक का रहना।

फूँकने के दोष

फूत्कारो यमल: स्तोक: कृश: स्खलित इत्यमी ॥ 657 ॥
फूत्कारदेषा यमलं ब्रुवते प्रतिफूत्कृतिम्।
एवमन्वर्थनामत्वान्नोच्यते लक्षणं पृथक् ॥ 658 ॥

शब्दार्थ : फूत्कार: फूत्कार, यमल: यमल, स्तोक: स्तोक, कृश: कृश, स्खलित: स्खलित इति अमी इस प्रकार ये फूत्कारदोषा: फूँक के दोष(होते हैं)। प्रतिफूत्कृतिं फिर से फूत्कार(करना) यमलं ब्रुवते यमल कहा जाता है। एवम् इस तरह अन्वर्थनामत्वात् अर्थ के अनुसार नाम हाने से पृथक् लक्षणं (सबका) अलग-अलग लक्षण नब्रुवते नहिं कहा जा रहा है।

1. **यमल**—फूँक (फूत्कार) के साथ प्रति फूत्कार की उत्पत्ति।
2. **स्तोक**—फूत्कार की कमी, नाद के स्थूल होने पर भी स्थान को पाने की शक्ति का लोप।
3. **कृश**—स्थान-प्राप्ति होने पर नाद का अस्थूल रहना।
4. **स्खालित**—बीच-बीच में ध्वनि स्थगित होना।
5. **कंपित**—कफ को युक्त्ता के कारण ध्वनि का विकृत भाव।
6. **तुंबकी**—कछु के नाद की तरह रहना।
7. **काकी**—तार प्राप्ति के अभाव के कारण कौवे जैसी ध्वनि रहना।
8. **संदष्ट**—दांत पीसने की तरह फूँकना।
9. **अव्यवस्थित**—नाद की एकरूपता न होना।

बाँसुरी वादक के गुण

अङ्गुलीसारणाभ्यास: सुस्थानत्वं सुरागता ॥ 663 ॥
सुरागव्यक्तिर्माधुर्यान्विता वेगाद गतागते।
गीवादनदक्षत्वं गातृणां तानदायिता/स्थानदायिता ॥ 664 ॥
तद्दोषाच्छादनं मार्गदेशीरागेषु कौशलम्।
स्वस्थानवदपस्थाने रागोद्भूतिप्रगल्भता ॥665 ॥
वंशिकस्य गुणानेतान् वक्ति श्रीकरणाग्रणी: । 666 ।

शब्दार्थ : अङगुलसारणा-अभ्यास: उँगलियों के चालन का अभ्यास, सुस्थानत्वं स्थान की समयक् (सही) प्राम्ति, सुरागता रंजकाता, वेगात् गत-आगते वेग से आरोह और अवरोह(युक्त प्रयोग) में माधुर्य-अन्विता मधुरता से युक्त होना, सुराव्यक्ति: अच्छी रागाभिव्यक्ति, गीवादनदक्षत्वं (गाये हुए) गीत के वादन में दक्षता, गातृणां गायकों को तानदायिता तान(राग के स्वरूप का प्रदर्शक मुख्य स्वरसमूह) देना (अथवा) स्थानदायिता स्थान(मन्द्र आदि तीन स्थान) प्रदान करना, तत् उस (गायक) के दोष-आच्छादनं दोषों(भूलों) को ढकना, मार्गदेशीरागेषु कौशलं मार्ग और देशी रागों (के वादन) में कुशलता, स्वस्थानवत् स्वस्थानों के समान (ही) अपस्थाने अपस्थान (स्वस्थानों से भिन्न स्वस्थान) में भी राग-उद्भूतिप्रगल्भता राग की उद्भावना में प्रौढ़ता एतान् वांशिकस्य गुणान् इन वांशिक के गुणों को श्रीकरण-अग्रणी: लेखाकारों में अग्रणी: (महालेखाकारों शारंदेव) वक्ति कहता है।

अँगुलियों के संचालन का अभ्यास मंद्र, मध्य और तार स्थानों की प्राप्ति। मधुरता से राग के भाव को अभिव्यक्त करने की क्षमता। वेगपूर्वक आगे और पीछे संचार करने की शक्ति। गीत और वादन में कुशलता। गायकों को स्वर देने की क्षमता। गायक के दोष को छिपाने की योग्यता। प्रचलित तथा अप्रचलित रागों का ज्ञान। अपस्थान स्वर में भी राग-भाव को उत्पन्न करने की शक्ति। ये समस्त गुण बाँसुरी-वादक में होने चाहिए।

बाँसुरी वादक के दोष

मिथ्याप्रयोगबाहुल्यमेतद्गुणविपर्यय: ॥ 666 ॥
इष्टक्थानानवाप्तिश्च शिरस: कम्पनं तथा।
वांशिकस्येति दोषा: स्युर्वर्जनीया: प्रयत्नत: ॥ 667 ॥

शब्दार्थ : एतत् गुणविपर्यय: इन गुणों का उल्टा, मिथ्याप्रयोगबाहुल्यम् अस्थानीय (अथवा अरंजक) प्रयोग की बहुलता इष्टस्थान-अन्-अवाप्ति: च और इच्छित स्थान की प्राप्ति न होनातथा शिरस: कम्पनं और सिर का हिलना इति ये वांशिकस्य दोषा: स्यु: वांशिक के दोष होते हैं। प्रयत्नन: (इन्हें) प्रयत्नपूर्वक वर्जनीया: वर्जित करना चाहिये।

मिथ्या प्रयोग, अर्थात अनुचित स्थान में अलाप करना अथवा गमक का ज्यादा प्रयोग करना। इष्ट स्थान तक पहुँने में असमर्थता। नेत्र बंद करना। बाँसुरी का होठों से बार-बार अलग करके हाथ नीचे ले आना। सिर का कंपन। बैठक में टेढ़ापन।

बाँसुरी के प्रकार

आजकल कईप्रकार की बाँसुरी प्रचलित हे। लकड़ी, बांस, पीतल, सैलोलाइट, अलमोनियम, आबनूस इत्यादि तरह-तरह की मिलती है। इनमें से बांस और पीतल की ही अधिक प्रचलन है। बाँसुरी दो प्रकार की होती हैं—आड़ी और सीधी। इनमें से आड़ी (मुरली) का बजाना आरंभ में कुछ कठिन पड़ता है, क्योंकि इसमें टेढ़ी फूँक द्वारा हवा देनी पड़ती है। अत: नवशिक्षितों को पहले सीधी बजनेवाली (आलगोजानुमा) बाँसुरी ही लेनी चाहिए। इसको बजाने का अभ्यास भली-भाँति हो जाए, तब आड़ी वंशी बजाने में कोई कठिनाई नही होती हैं।

वास्तव में देखा जाए, तो बाँसुरी बांस की ही उश्रम रहती है। बांस की बाँसुरी से जो मीठी स्वर लहरी निकलती हैं, वह धातुओं की बाँसुरी में कहाँ? किंतु बांस की बाँसुरी, जो आज कल मिलती हैं, उनमे सबसे बड़ा दोष यह हे कि वे टयूंड की हुई मुश्किल से मिलती हैं एवं कुछ दिन बार तिरककर फट जाती है, क्योंकि बाँस की बाँसूरी अधिक गर्मी सहन नहीं कर सकती। इसीलिए आजकल प्राय: पीतल या लकड़ी की बाँसुरी ही अधिक प्रचलित हैं, अत: सीखने वाले विद्यार्थियों को हम पीतल या लकड़ी की बाँसुरी लेने की सलाह देंगे।

पीतल की देशी बाँसुरी जो बिकती हैं, उनमें सात या आठ सुराख होते हैं, एक सुराख पीछे भी बना रहता है। इनमें सबसे भारी दोष यह होता हे कि इनके स्वर अंट-संट अंदाज से बने हुए हैं, अत: ये भी ट्यूंड नही होती और इसीलिए इनमें राग निकालने में परेशानी होती हैं पीतल की बाँसुरी, जो 6 सुराखवाली। A, B, C, D इत्यादि नबंरों वाली इंगलिश टाइप की आती हैं, इनके सूराख बिल्कुल कायदे से बने हुए होते हैं और ये ट्यूंड भी होती हैं। पहले ये विलायती बनी हुई आती थी, किंतु अब हिंदुस्तान की भी एक-दो-फर्म विलायती के टक्कर की बाँसुरीबनाने लगी हैं। सिखने वालों को यही बाँसुरी लेनी चाहिए, क्योंकि इससे सभी स्वर ठीक-ठीक निकल सकते हैं।

आजकल बाँसुरी की मांग बाजार में अधिक होने के कारण बहुत से विज्ञापन बाज बाँसुरी के आकर्षक विज्ञापन अखबारों में देकर भोली जनता को बुरी तरह ठग रहे हैं। अपने विज्ञापनों में वे बाँसुरी के ट्यूंड होने का दम भी भरतें हैं किंतु जब ग्राहक के पास वी.पी. आती है और वह उसे खोल कर बजाता है, तो वह एक खिलौना की तरह बच्चों के बजाने लायक ही निकलती है, वह पछताता हैं।

अत: पाठकों को चाहिए कि किसी विश्वसनीय फर्म से ही बाँसुरी में गाएँ या खुद देखकर खरीदें। जिन्हे कुछ स्वर-ज्ञान पहले से ही हे, वे तो उसे देखकर टैस्ट करके खरीद ही सकते हैं, किंतु जिन्हें स्वर-ज्ञान नहीं हैं, वे किसी दूसरे जानकार व्यक्ति से टैस्ट कराकर खरीदें, तो घाटे में न रहेंगे।

ऊपर हमने लिखा है कि विलायती ढंग की बाँसुरी कई नंबरें की आती हैं, FF, AB, Bb, C,D,E इत्यादि। इन नंबरों के क्रमानुसार बाँसुरी छोटी-बड़ी होती हैं। FF नंबर की सबसे बड़ी होती है और इसकी आवाज भी मोटी होती हैं, अत: फूँक भी ज्यादा देनी पड़ती है। E नंबर की बहुत छोटी होती है, इसीलिए इसकी आवाज बारीक होती है। हमारी राय से Bb या नंबर की बाँसुरी विद्यार्थियों के लिए ठीक रहती हैं, क्योंकि इनकी आवाज न तो बहुत मोटी होती है और न बहुत बारीक। साँस भी अधिक नहीं देनी पड़ती।

बाँसुरी बजाने से पहले

1. बाँसुरी बजाते समय चित्त एकाग्र होना चाहिए। किसी प्रकार की उथल-पुथल हृदय में न हो।
2. बाँसुरी सीखने से पहले ताल, लय का बोध होना आवश्यक हैं।
3. बाँसुरी-वादक स्वच्छ और गंभीर होकर बैठे।
4. खाँसी या दमा के रोगी बाँसुरी न बजाएँ, अन्यथा उनके फेफड़ों को हानि पहुँच सकती हैं।
5. बजाने से पहले थोड़ा-सा जल पी लेना अच्छा हैं।
6. बाँसुरी का नीचेवाला हिस्सा सीधे हाथ (Right Hand) से पकड़ना चाहिए और ऊपरवाला हिस्सा बाएँ हाथ (Left Hand) से। इसके विरुद्ध कुछ लोगों का मत है कि ऊपर-वाले हिस्से पर सीधा और नीचे वाले पर बायाँ हाथ रखना चाहिए। इन नियमों में से पाठकों को जो भी रुचिकर हो, उसी की आदत डाल लें, बार-बार बदलें नहीं। हमारी राय से पहले बताया हुआ नियम उत्तम है, यह नियम आगे चलकर सहायता देता है, क्योंकि आड़ी मुरली और क्लारनेट बजाने में भी ऊपर बांया और नीचे सीधा हाथ रखना ठीक रहता हैं।
7. बाँसुरी बजाते समय सरगम या गीत के बोलों को मात्राओं के अनुसार मुँह से 'कु-कु-कु-कु' इस प्रकार करते रहे कि मुँह की आवाज न निकले, यह इशारा केवल हवा को ठोकर देकर मात्राओं को अलग-अलग दर्शाने के लिए होता है। जहाँ एक माात्रा का ठहराव है, वहाँ 'कूऊ' ऐसा करना चाहिए।
8. बाँसुरी में यदि लकड़ी की डाट हो, तो उसमें जिभिया के पास दो-बार दिन बाद तिली या सरसा का तेल दो-दो बूँद डाल देने से बाँसुरी का सुरीलापन बड़ जाता है, किंतु पीतल की बाँसुरियों में इसकी आवश्यकता नहीं हैं। हाँ, पीतल की बाँसुरी की जिभिया में मैल-मिट्टी न भरने पाए, अत: उसे पानी से धो लेना चाहिए और फिर एक कड़ी फूँक मारकर साफ कर देनी चाहिए। बाँस

की वंशी को पानी से धोकर बजाने से सुरीलापन बढ़ जाता है।

9. पीतल की बाँसुरी को सावधानी से रखना चाहिए, क्योंकि इसके जमीन पर गिर पड़ने से आवाज में फर्क आ जाता है और फिर उसका ठीक होना मुश्किल हो जाता हैं।
10. हाथों की अँगुलियों को पोर जितनी मुलायम होगी, उतने ही साफ स्वर निकलेंगे अत: अपनी अँगुलियों को मुलायम बनाने की चेष्टा रखनी चाहिए।
11. बजाने से पहले अपने हाथों को साफ पानी से धो लेना चाहिए, बजाते समय अँगुलियों न चिपकें, वरना बजाने में बाधा पैदा हो जाएगी।

बाँसुरी में सरगम निकालना

सबसे पहले बाँसुरी के सब सुराखों को अँगुलियों के अग्रभाग (पोर) से अच्छी तरह दबाइए। बाएँ हाथ की पहली, दूसरी, तीसरी अँगुलियाँ ऊपर के तीन सूराखों पर दबाइए और दहिने हाथ की पहली, दूसरी, तीसरी अँगुलियों नीचे के तीन सुराख दबाइए। जब अच्छी तरह से सूराख बंद हो जाएँ, तब मुँह से हल्की फूँक लगाते चलिए और नीचे से एक-एक सूराख बारी-बारी से खोलते चलिए, जब इस प्रकार 'आरोह' करके सब सूराख खुल जाएँ, तो ऊपर से एक-एक सूराख बंद करके 'अवरोह' कीजिए। इस प्रकार तीन-चार दिन तक नित्य प्रति एक-एक घंटा अभ्यास करने से आपकी अँगुलियों ठीक से चलने लगेंगी। बीच में कहीं आवाज फटी हुई मालूम पड़े या कंसुरी मालूम हो, तो देखना चाहिए कि कोई अँगुली किसी सूराख से तनिक भी हट जाएगी, तो उसी समय स्वर भंग हो जाएगा, अत: सूराख अच्छी तरह दबें रहें, इसका पूरा ध्यान रखिए।

बाँसुरी से स्वर निकालना

हारमोनियम में पहले-पहले शुद्ध स्वर निकालने बताए जाते हैं, किंतु बाँसुरी में पहले जो सरगम निकाली जाएगी, उसमें और तो सब शुद्ध स्वर होंगे सिर्फ मध्यम तीव्र होगा, क्योंकि बाँसुरी में शुद्ध मध्यम आधा सूराख खोलने से निकलता है और उसको निकालने में आरंभ में विद्यार्थियों को कुछ कठिनाई पड़ती हैं। इसीलिए पहले 'सा, रे, ग, म, प, ध, नि' इन स्वरों का अभ्यास ही करना चाहिए।

सा— ऊपर से 3 सूराख बंद करके हलकी फूँक से निकलेगा।
रे— ऊपर के 2 सूराख बंद करके हलकी फूँक से निकलेगा।
ग— ऊपर के 1 सूराख बंद करके हलकी फूँक से निकलेगा।
मं— सब सूराख खोलने पर हलकी फूँक से निकलेगा।
प— सब सूराख बंद करके तेज फूँक से लगाइए।
धा— ऊपर से पाँच सूराख बंद करके तेज फूँक लगाइए।
नि— ऊपर से चार सूराख बंद करके तेज फूँक लगाइए।
स— ऊपर से तीन सूराख बंद करके तेज फूँक लगाइए।

ध्यान दीजिए कि 'स,रे,ग,मं' तक निकालने में हलकी फूँक लगाने को लिखा गया हैं, किंतु 'सा' के बाद 'रे,ग,मं' तक फूँक का दबाब धीरे-धीरे बढ़ता जाता है और जिस समय सब सूराख खोलकर 'मं' बजा चुके तो एकदम कुल सूराख बंद करके फूँक का दबाब बढ़ा दो, पंचम निकल आएगा। इसके बाद धीरे-धीरे फूँक बढ़ते आइए और 'सां' तक के स्वर उपर्युक्त रीति से निकालिए।

तीव्र मध्यम को बजाने के बाद सब उँगलियों सूराखों पर से हट जाती हैं, वहाँ पर यह प्रश्न पैदा हो सकता है कि अब बाँसुरी सधेगी कैसे? इसीलिए उसमें कुछ कठिनाई नहीं होती क्योंकि जब नीचे वाले सूराखों से उँगलिया हट जाएँ बजाते-बजाते 'मं' पर आ जाएँ, तो नीचे के तीन स्वरों को दबाने में कोई हर्ज या अंतर नहीं पड़ता, बल्कि इससे यह एक लाभ ओर होता है कि जब मध्यम दबाने पर उँगलियाँ हट जाती हैं तो क्षणमात्र में ही पंचम बजाने के लिए छह सूराख एकदम बजाने में सहूलियत हो जाती है, क्योंकि नीचे की तीन उँगलियाँ तो पहले से ही सूराखों पर मौजूद रहती हैं इस युक्ति से बाँसुरी भी सधी रहती है।

इस प्रकार 'स, रे, ग, म, प, ध, नि, सां' का आरोह-अवरोह करके खूब अभ्यास कीजिए, इसके बाद अन्य कोमल-तीव्र (विकृत) स्वर इस प्रकार निकलेंगे। ध्यान रखिए कि विकृत स्वरों को निकालने में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती हैं, क्योंकि आधे-आधे सूराखों को खोलने में कोमल-तीव्र स्वर बनते हैं।

रे कोमल ऋषभ ऊपर से ढाई सूराख दबाने से निकलेगा।
ग कोमल गांधार ऊपर से डेढ सूराख दबाने से निकलेगा।
म कोमल मध्म ऊपर का आधा सूराख दबाने से निकलेगा।

उपर्युक्त विधि से मध्य-सप्तक के कोमल, तीव्र सभी स्वर निकल आए, लेकिन अभी तो इन छह छिद्रों में ही मंद्र और तार सप्तक के स्वर भी निकालने हैं, वे इस प्रकार निकलेगें:-

प़ — मंद्र सप्तक का पंचम सब सूराख बंद करके बहुत हलकी फूँक से निकलेगा।
ध़ — मंद्र सप्तक का कोमल ध ऊपर से साढ़े पाँच सूराख बंद करके निकलेगा।
ध़ — मंद्र सप्तक का शुद्ध धैवत ऊपर से पाँच सूराख बंद करके निकलेगा।
नि़ — मंद्र सप्तक का कोमल निषाद ऊपर से साढ़े पाँच सूराख बंद करके निकलेगा।
नि़ — मंद्र सप्तक का शुद्ध निषाद ऊपर से चार सूराख बंद करके निकलेगा।

उपर्युक्त स्वरों को निकालते समय फूँक का वजन बहुत हल्का रखना चाहिए और जैसे-जैसे स्वर ऊपर को चढ़ाते आएँ, फूँक को जरा-जरा सी बढ़ाते रहिए। ध्यान रखिए, अगर फूँक का दबाव अधिक बढ़ जाएगा, तो यही स्वर इन्हीं सूराखों पर मध्य सप्तक के बोलने लगेंगे, मंद्र सप्तक के पंचम से नीचा स्वर निकलना संभव नहीं और उसकी विशेष आवश्यकता भी नहीं पड़ती। [17-18]

उँगलियों का संचलन तथा स्वरों का निकास विभिन्न चित्रों के माध्यम से—

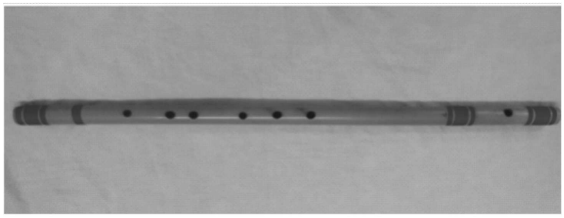

चित्र क्रमांक 1 — *(बाँसुरी)*

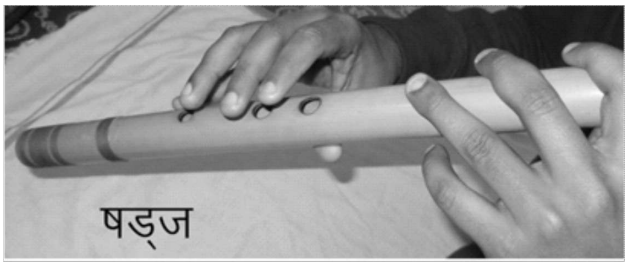

चित्र क्रमांक 2 — *(षडज)*

चित्र क्रमांक 3 — *(कोमल ऋषभ)*

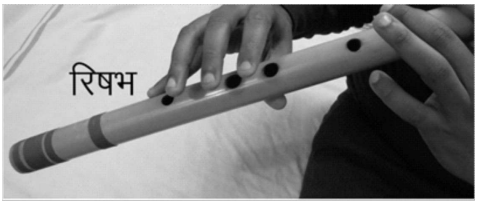

चित्र क्रमांक 4 — *(ऋषभ)*

चित्र क्रमांक 5 — *(कोमल गांधार)*

चित्र क्रमांक 6 — *(गांधार)*

चित्र क्रमांक 7 — *(शुद्ध मध्यम)*

चित्र क्रमांक 8 — *(तीव्र मध्यम)*

चित्र क्रमांक 9 — *(पंचम)*

चित्र क्रमांक 10 — *(कोमल धैवत)*

चित्र क्रमांक 11 — *(धैवत)*

चित्र क्रमांक 12 — *(कोमल निषाद)*

चित्र क्रमांक 13 — *(निषाद)*

स्वरलिपि पद्धति

क्रमांक	हिन्दुस्तानी स्वरलिपि पद्धति	सोल्फा स्वरलिपि पद्धति	स्टाफ स्वर लिपि पद्धति
1.	सा	Do	C
2.	रे	Re	D
3.	ग	Ma	E
4.	म	FA	F
5.	प	Sol	G
6.	ध	LA	A
7.	नि	Si	B

तार-सप्तक के स्वर

मंद्र और मध्य सप्तक के स्वर उपर्युक्त विधि से निकालकर तार-सप्तक के स्वर फूँक का दबाव बढ़ाते हुए इस प्रकार निकालकर तार-सप्तक के स्वर फूँक का दबाव बढ़ाते हुए इस प्रकार निकालिए—

सां तार — सप्तक का षड्ज ऊपर के तीन सुराख बंद करने पर।

रें तार — सप्तक का कोमल ऋषभ ऊपर के ढाई सुराख बंद करने पर।

रें तार — सप्तक का शुद्ध ऋषभ ऊपर के दो सुराख बंद करने पर।

गं तार — सप्तक का शुद्ध गांधार ऊपर 1½ सुराख बंद करने पर।

गं तार — सप्तक का शुद्ध गांधार ऊपर का एक सुराख बंद करने पर।

मं तार — सप्तक का शुद्ध मध्यम ऊपर का आधा सुराख बंद करने पर।

म तार — सप्तक का तीव्र मध्यम सब सुराख खोलकर निकालिए।

पं तार — सप्तक का पंचम सब सुराख बंद करके फूँक का दबाव और भी बढ़ाने से निकालेगा।

देखा आपने! बाँसुरी के केवल छह छिद्रों से पच्चीस स्वर स्थान निकल आए। स्वर ही क्या,बाँसुरी में तो श्रुतियों भी निकल सकती हैं और जब श्रुतियाँ निकल आई, तो मीड़ निकालना तो आसान हो ही जाता है। अतः हारमोनियम में जो बात पैदा नहीं हो सकती, वह बाँसुरी द्वारा सहजता से दिखाई जा सकती हैं। मगर होना चाहिए कुशल बाँसुरी वादक।

बाँसुरी में श्रुति दर्शन

बाँसुरी में श्रुतियों कैसे निकल सकती है? यह निम्नलिखित एक उदाहरण से आप भली प्रकार समझ जाएँगे। यहाँ संक्षेप में पहले यह बता देना अनुचित न होगा कि श्रुति किसे कहते हैं? वैसे तो श्रुतियों के विवरण में संगीत के ग्रंथ भरे पड़े हैं, किंतु यहाँ पर बाँसुरी का विषय चल रहा है, इसीलिए हम थोड़े से शबदों में ही आपको यह बताए देते है कि एक स्वर से दूसरे स्वर के बीच में जो छोटे-छोटे स्वर स्थान और हैं, वो ही श्रुतियाँ हैं। इस प्रकार हमारे संगीताचार्यों ने बाइस श्रुतियाँ मानी हैं। उदाहरर्ण संगीत के ग्रंथों में षड्ज (सा) के बाद तीव्र ऋषभ तक चार श्रुतियाँ बताई हैं, जो इस प्रकार है:-

स्वर नंबर :	1	2	3	4
स्वर नाम :	रे अतिकोमल	रे कोमल	रे मध्य	रे तार
श्रुति नाम :	दयावति	श्रंजनी	रक्तिका	रौद्री

ये श्रुतियाँ आपकी बाँसुरी में इस प्रकार निकलेंगी :

दयावती (रे अतिकोमल) ऊपर से ढाई सुराख बंद करके।

रंजनी (रे कोमल) ऊपर से सवा सुराख बंद करके।

रक्तिका (रे मध्य) ऊपर से दो सुराख बंद करके।

रौद्री (रे तार) ऊपर के दो सुराख बंद करके। [19]

इस प्रकार चैथाई सूराख के हेरफेर से सभी श्रुतियाँ निकल आती हैं। किंतु नए सीखने वालों को आरंभ में श्रुतियों के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए।

पहले तो उन्हें स्वर निकालने चाहिए, फिर कुछ अंलकार पलटे और सरल-सरल रागों की गतें। इसके बाद जब हाथ में खुब सफाई और तैयारी आ जाएगी एवं कानस्वरों को अच्छी तरह पहचानने लगेंगे, तब श्रुतियाँ आप स्वयं ही निकालने लगेंगे।

ऊपर जो स्वर निकालने के ढंग कई जगह बताए गए हैं, वे अब निम्नांकित चार्ट (नक्शे) में सब एक स्थान पर ही दिखाए जाते हैं :

छ सुराख बाँसुरी में 25 स्वर स्थान

नं	स्वर	ऊपर के सूराख बन्द कीजिए
1.	प.	6
2.	ध़	5 ½
3.	ध़	5
4.	नि़	4 ½
5.	नि़	4
6.	स	3
7.	रे	2 ½
8.	रे	2
9.	ग	1½
10.	ग	1
11.	म	½
12.	म	0 (सब खोल दीजिए)
13.	प	6
14.	ध	5½
15.	ध	5
16.	नि	4½
17.	नि	4
18.	सां	3
19.	रें	2½
2..	रें	2
21.	गं	1½
22.	गं	1
23.	मं	½
24.	मं	0 (सब खोल दीजिए)
25.	पं	6 (सब बन्द कर दीजिए)

ध्यान रहे, मुँह की फूँका का दबाव नं. 1 स्वर पर बहुत ही हल्का रहेगा और फिर क्रमशः बढ़ता जाएगा, यहाँ तक कि नं. 25 के स्वर (पं) पर एक कड़ी फूँक मारनी होगी, किंतु इतनी कड़ी नहीं कि स्वर फटा हुआ निकले। इस प्रकार तार-सप्ते में पंचम तक स्वर निकल आए, इससे आगे भी एक-दो स्वर निकलने संभव हसे सकते हे, किंतु वह बाँसुरी वादक की कुशलता और साधना के ऊपर निर्भर हैं।

अब बाँसुरी में अभ्यास करने के लिए कुछ अलंकार और पलटे दिए जाते हैं, इनका खूब अभ्यास कीजिए, उसके बाद गत निकलिए, जोकि पलटों से आगे दी जा रही हैं।

बाँसुरी में अलंकार (पलटे)

इनमें मध्यम तीव्र है, शेष स्वर शुद्ध है।

आरोह	:	स	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
ऊपर से सूराख बंद कीजिए	:	3	2	1	0	6	5	4	3
मुँह से हवा के बोध	:	कू	कू	कू	कू	कू	कू	कू	कू
अवरोह	:	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
सूराख बंद	:	3	4	5	6	0	1	2	3

इस प्रकार ये आरोह-अवरोह निकालिए। साथ ही साथ स्वरों के अलग-अलग टुकड़े दिखाने के लिए मुँह से (कू कू कू) हवा द्वारा ऐसी युक्ति से करते जाईए कि मुँह में आवाज पैदा न हों नीचे के अलंकार गौर गत भी इसी नियम से दिए जाएँगे, जैसे ऊपर दिए गए पहले में पहली लाइन में स्वर, दूसरी में सूराख बंद करने के नंबर, तीसरी में हवा के बोल दिए गए है :

पलटा-1

स	रे	ग,	रे	ग	म,	ग॑	म	प॑,	म	प	ध,	प	ध	नि,	ध	नि	सां
3	2	1,	2	1	0,	1	0	6,	0	6	5,	6	5	4,	5	4	3
कु	कु	कू	कु	कु	कू	कु	कु	कू	कु	कु	कू	कु	कु	कू	कु	कु	कू
सं	नि	ध,	नि	ध	प,	ध	प	म,	प॑	म	ग॑,	म	ग	'रे,	ग	रे	स
3	4	5,	4	5	6,	5	6	0,	6	0	1,	0	1	2,	1	2	3
कु	कु	कू	कु	कु	कू	कु	कु	कू	कु	कु	कू	कु	कु	कू	कु	कु	कू

पलटा-2

सा	रे	ग	म॑,	रे	ग	म	'प,	ग	म	प॑	ध,	म	प	'ध	नि,	प	ध	नि	सां
3	2	1	0,	2	1	0	6	1	0	6	5,	0	6	5	4,	6	5	4	3
कु	कु	कु	कू	कु	कु	कु	कू	कु	कु	कु	कू	कु	कु	कु	कू	कु	कु	कु	कू
सां	नि	ध	प,	नि	ध	प	म,	ध	प	म	ग	प	म	ग	रे,	म	ग	रे	स
3	4	5	6,	4	5	6	0,	5	6	0	1,	6	0	1	2,	0	1	2	3
कु	कु	कु	कू	कु	कु	कु	कू	कु	कु	कु	कू	कु	कु	कु	कू	कु	कु	कु	कू

उसी प्रकार बहुत से पलटे पुस्तकों द्वारा निकाले जा सकते हैं। अब नीचे राग भूपाली की एक गत बाँसुरी में निकालने को दी जाती है, जो आचार्य भातखण्डे जी की हैं। विद्यार्थियों को यह गत आंरभ में सिखाई जाती है, इसीलिए इस गत का अभ्यास अवश्य कीजिए—

गत [20]

मात्रा विभाग—16, राग—भूपाली, ताल—त्रिताल, ताल विभाग 1,2,15 खाली 9.

स्थाई

0		3				×				2					
सं	सं	ध	प	ग	रे	स	रे	ग	–	प	ग	ध	प	ग	–
3	3	5	6	1	2	3	2	1	5	6	1	5	6	1	–
कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	ऊ	कु	कु	कु	कु	कु	कु
ग	प	ध	स	रें	से	ध	प	ध	से	ध	प	ग	रे	से	–
1	6	5	3	2	3	5	6	5	3	5	6	1	2	3	–
कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु

इसके बाद ऊपर के पंक्ति बजाइए—

अंतरा

0		3				×				2					
ग	–	प	ध	स	–	सं	सं	ध	ध	सं	रें	सं	सं	ध	प
1	–	6	5	3	–	3	3	5	5	3	2	3	3	5	6
कू	ऊ	कु	कु	कू	ऊ	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु
गं	गं	रें	स	रे	रे	सं	ध	सं	सं	ध	प	ग	रे	स	–
1	1	2	3	2	2	3	5	3	3	5	6	1	2	3	–
कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	ऊ

पाद-टिप्पणियाँ

1. शारंगदेकृत संगीत रत्नाकर, सम्पादक : सुभद्रा चौधरी, तृतीय खण्ड, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, श्लोक संख्या 424, पृ. 362-363
2. वही, श्लोक संख्या 425, पृ. 362-363
3. वही, श्लोक संख्या 426, पृ. 362-363
4. वही, श्लोक संख्या 455, पृ. 369
5. वही, श्लोक संख्या 456, पृ. 369
6. वही, श्लोक संख्या 654, पृ. 402-403
7. वही, श्लोक संख्या 655, पृ. 402-403
8. वही, श्लोक संख्या 656, पृ. 402-403
9. वही, श्लोक संख्या 657, पृ. 404
10. वही, श्लोक संख्या 658, पृ. 404
11. वही, श्लोक संख्या 663, पृ. 406
12. वही, श्लोक संख्या 664, पृ. 406
13. वही, श्लोक संख्या 665, पृ. 406
14. वही, श्लोक संख्या 666, पृ. 406
15. वही, श्लोक संख्या 666, पृ. 407
16. वही, श्लोक संख्या 667, पृ. 407
17. जायसवाल, राधेश्याम, भारतीय सुषिर-वाद्य का इतिहास, प्रकाशक, वाराणसेय संस्कृत संस्थान, जगतगंज, वाराणसी, प्रथम संस्करण, मार्च 1983, पृ. 174
18. वही, पृ. 18
19. शास्त्री, बाबूलाल शुक्ल, श्री भरतमुनि प्रणीत हिन्दी नाट्यशास्त्र, चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी, संस्करण-द्वितीय
20. ठाकुर, पं. ओमकारनाथ, संगीतांजलि, संपादक : पं बलबन्त भट्ट ''भावरंग'', प्रेमलता शर्मा